OM 19 a_Page 1 and 2 14/01/2015 09:46 Page 11

श्रेष्ठ कर्म के प्रणेता 'ब्रह्माबाबा'

यों तो सबसे बड़ा विघ्न, ऊँचे लक्ष्य पर दृढ़ न होना व उसे प्राप्त करने में अलबेलापन ही है। परंतु कई योगी ऐसी अवस्था प्राप्ति की इच्छा रखते हुए भी अपने सामने एक दीवार अनुभव करते हैं। वह दीवार क्या है? जो कभी-कभी तो उन्हें दिखाई भी नहीं पड़ती और यदि दिखाई देती भी है तो उसकी सुंदरता को देखकर वे उसे तोड़ना नहीं चाहते।

यह विशेष विघ्न या दीवार है-स्वार्थ की। जीवन में स्वार्थ की कहानी बड़ी लम्बी होती है। पग-पग पर प्रत्येक मनुष्य पहले स्वार्थ का ही ध्यान रखता है, इसे ही ध्यान में रखकर वह कोई काम करता है या निर्णय लेता है। हम सब या तो लौकिक कार्यों में व्यस्त हैं या अलौकिक कार्यों में। दोनों में ही हमारा स्वार्थ हमें बंधन में बांधता है। यदि कोई मनुष्य अपने सूक्ष्म स्वार्थ को महसूस करके इस बंधन को तोड़ दे तो वह तेज़ी से कर्मातीत अवस्था की ओर बढ़ सकता है। हमें कर्मातीत होने के लिए सर्व प्रकार के बंधनों से मुक्त होना है। तो आओ, हम देख लें कि बंधन हैं कौन-कौन से, जिनसे हमें मुक्त होना है। और हम यह भी याद रखें कि इन बंधनों के जाल हमने ही बनाये हैं अत: इनसे मुक्त होना हमारे लिए कठिन कार्य नहीं है।

बंधन व उनसे मुक्ति

जैसे यदि किसी मनुष्य को रस्सी से बांध दिया जाए तो वह कुछ भी नहीं कर सकता। वह परवश हो जाता है। इसी प्रकार प्रत्येक मनुष्यात्मा अनेक बंधनों में बंधी है। हमें पहले ज्ञान-बल से अपने बंधन खोलने हैं, फिर योगाग्नि में उन्हें जला देना है।

तो पहला बंधन है-मन का बंधन। मनुष्य चाहता है तीव्र पुरुषार्थ करना परंतु मन उसे करने नहीं देता। व्यर्थ, हीन, निराशात्मक व कमज़ोर विचार बार-बार मन को अपने अधीन कर लेते हैं। ज्ञान-बल से विचारों को महान व शक्तिशाली बनाकर हम इन बंधनों से मुक्त बनें।

दूसरा बंधन है-व्यर्थ बोल व व्यर्थ कर्मों का बंधन... व्यर्थ व विस्तार के बोल बोलकर, मनुष्य निरंतर अपनी शक्ति को नष्ट करता है। उसे भूल जाता है कि योगी बोल का रस नहीं लेते, वे तो मौन का रस लेते हैं। तो हम चेक करें कि जो बोल हमने बोला या जो कर्म हमने किया, वह फल देने वाला है या निष्फल है। यदि निष्फल है तो उसका त्याग कर दें।

तीसरा बंधन है-तेरे-मेरे का... इस भावना से ही मनुष्य तनाव व परेशानी के बीज बोता है। इससे मुक्त होने के लिए बेहद की वृत्ति बनाने की आवश्यकता है।

चौथा बंधन है-स्वभाव, संस्कार का... पुराने स्वभाव-संस्कार भी मनुष्य को बरबस बांध लेते हैं। तो जैसे बाबा सदा ही अपने अनादि आदि संस्कारों के स्वरूप बनकर रहे, हम भी सदा इसी स्वरूप में रहें कि ये पुराने संस्कार मेरे नहीं, मेरे तो ये दिव्य संस्कार हैं। चाहते न हों और संस्कार कर्म करा दें-यह है बंधन और हमारे स्वभाव संस्कार हमें परेशान न करें-यह है बंधन-मुक्त की निशानी।

पाँचवा बंधन है-परिस्थितियों व व्यक्तियों के प्रभाव का बंधन... बड़ा ही जटिल बंधन है यह। परिस्थिति व व्यक्ति हमारी स्थिति को डगमग न करें-यह है बंधन-मुक्त की निशानी। स्व-स्थिति व स्वमान से परिस्थितियों पर विजयी बनें व आत्मिक वृत्ति व मेरे-पन के त्याग से मनुष्यों के प्रभाव को समाप्त करें।

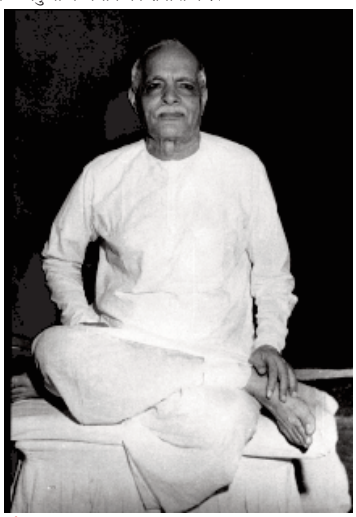

जैसे यदि किसी मनुष्य को रस्सी से बांध दिया जाए तो वह कुछ भी नहीं कर सकता। वह परवश हो जाता है। इसी प्रकार प्रत्येक मनुष्यात्मा अनेक बंधनों में बंधी है। हमें पहले ज्ञान-बल से अपने बंधन खोलने हैं, फिर योगाग्नि में उन्हें जला देना है।

छठा बंधन-प्रकृति का बंधन... पहली प्रकृति है हमारा शरीर। शरीर की व्याधि हमें बंधन न लगे, नीचे न लाए, हमें दु:खी या परेशान न करे, यह है इस बंधन से मुक्ति। व्याधि पुरुषार्थ को रफ्तार दे, इसके लिए व्याधि का चिन्तन न हो बल्कि स्वचिंतन व ईश्वरीय चिंतन हो। हमारे मुख से यह शब्द न निकले कि मैं बीमार था इसलिए पुरुषार्थ नहीं कर सका, बल्कि हम कहें कि हमारी व्याधि हमें कर्मातीत स्थिति के समीप ले आई। जैसे ब्रह्मा बाबा ने दिखाया-व्याधियों के समय वे अधिक मग्न थे, व्याधियों के प्रभाव से परे ईश्वरीय नशे में थे।

सातवां बंधन है-सेवाओं का... सेवा तो बंधन नहीं है, बंधन मुक्त होने का साधन है। परंतु कभी-कभी हम सेवा को बंधन बना देते हैं। सेवा में रॉयल इच्छाएं हमें बंधन में बांधती हैं। सेवा में स्वार्थ भी बंधन का कारण है। तो हमें याद रहे कि जो सेवा स्थिति को डगमग करे, कर्मातीत होने में विघ्न लगे वह यथार्थ सेवा नहीं। सेवा का बल हमारी स्थिति को आगे बढ़ाता है, हमें आनंदित करता है व मायाजीत बनाता है। तो हम देख लें कि कोई सेवा हमें कर्मातीत बनने में बंधन तो नहीं है। जैसे पिताश्री सबसे बड़ी ज़िम्मेदारी संभालते हुए भी सदा बंधन मुक्त रहे, वैसे ही सेवा की ज़िम्मेदारी हमें बंधन मुक्त बनाये।

आठवां बंधन है-पदार्थों का... पदार्थों की उलझन, उन्हें प्राप्ति की आकांक्षा, पुन: उन्हें उपयोग की उलझन मनुष्य को उलझाये रखती है। परंतु पदार्थ व वैभव हमें बंधन में न बांधें इसके लिए हम राजा जनक की एक कहानी याद करें। एक सन्यासी ने राजा जनक से पूछा कि राजन! आप तो महलों में रहते हैं, इतने पदार्थों का उपभोग कर रहे हैं, नाच-गाना, दास-दासी रखते हैं, आप कैसे योगी या विदेही हो सकते हैं? क्या आप इन सबमें लिप्त नहीं हैं? जनक ने उत्तर दिया-महात्मन् ''मैं महलों में रहता हूँ, परंतु महल मुझमें नहीं रहता, मैं वस्तुओं का उपयोग करता हूँ, परंतु वस्तुएं मेरा उपभोग नहीं करती।'' बस यही रहस्य है-अनासक्त होने का।

इस प्रकार स्वयं को हम चेक करें कि कर्मातीत होने में हमारे मार्ग में अब कौन-सा विघ्न है, बंधन है। उन्हें काटकर हम शीघ्र ही मुक्त बनें। इन सभी बंधनों को वैराग्य की तलवार से सहज ही काटा जा सकता है। सम्पूर्ण विश्व को बंधन-मुक्त बनाने वाले भगवान के बच्चे होकर भी यदि हम बंधन युक्त रहे तो हमें भगवान के बच्चे कौन कहेगा?

बेहद का वैराग्य

जिन्होंने पिताश्री जी को देखा, वे जानते हैं कि प्रारंभ से ही उनका मन पूर्ण विरक्त, वैराग्य से भरपूर था। यह वैराग्य किसी स्थूल घटना पर आधारित नहीं था। इसका आधार ईश्वरीय अनुभव था, यह वैराग्य ज्ञान-युक्त था। इसलिए आदि से अन्त तक उनके वैराग्य में कमी नहीं आई। कोई भी वैभव, प्राप्तियां या सेवा का विस्तार उनके वैराग्य को कम नहीं कर पाया। इसी महान वैराग्य की नींव पर वे महान त्यागी, महान तपस्वी व सम्पूर्ण बंधन-मुक्त बने।

हमें भी ज्ञान-युक्त होकर बेहद का वैराग्य धारण करना है। वैराग्य मन को स्थिर करता है, वैराग्य उपराम वृत्ति बनाता है, वैराग्य सभी शौक समाप्त कर केवल ईश्वरीय मिलन का शौक उत्पन्न करता है। वैराग्यवान व्यक्ति ही अपने मन, बुद्धि व संस्कारों पर राज्य कर सकता है। अब समय समीप आ रहा है, घर जाने के दिन समीप आ रहे हैं, तो आसक्तियां व अनुराग क्यों? अब हमें चाहिए कि मन को पूर्ण विरक्त करें, जहाँ-जहाँ भी यह आसक्त हो, वैराग्य वृत्ति से इसे उपराम करें, तब ही हम समय से पूर्व कर्मातीत हो सकेंगे।

तो आओ... हम सभी ब्रह्मा वत्स अपने माननीय व परम पूज्य पिताश्री जी से प्रेरणा लेकर बेहद का वैराग्य धारण करें, उनके पद-चिन्हों पर चलकर कर्मातीत अवस्था की ओर बढ़ें। पिताश्री जी की भी यही श्रेष्ठ आशा है। उन्हें याद करते हुए हम सच्चे मन से उनकी आशाओं को पूर्ण करने का संकल्प करें। तब ही हम उनके महान व योगी वत्स कहलायेंगे, तब ही हममें, संसार उनका स्वरूप देख सकेगा और लोग मुक्तकंठ से गान करेंगे...

''शिव के रथी तूने जग में कर दिया कमाल''

-ब्र.कु. सूर्य, माउण्ट आबू

आलन्द। 'शान्ति सद्भावना महोत्सव' के दौरान मंचासीन तालुका पंचायत अध्यक्षा प्रभावती दगे, के. रायपरेड्डी,बी.ई.ओ., डॉ काशीनाथ बिरादार,प्रिंसीपल,गवर्नमेंट डिग्री कॉलेज, ब्र.कु. प्रेम,माउण्ट आबू, ब्र.कु. विजया, अन्य बहनें तथा बच्चे।

सांपला-हरियाणा। 'एक शाम शिव पिता के नाम' कार्यक्रम में दीप प्रज्वलित करते हुए महंत कालिदास महाराज, समाजसेवी प्रदीप नांदल, ब्र.कु. संतोष, ब्र.कु. ललित तथा अन्य।

जाँजगीर। खोखरा जेल में आयोजित राजयोग शिविर में सम्बोधित करते हुए ब्र.कु. रेणु। साथ हैं ब्र.कु. कविता, ब्र.कु. सुभद्रा व अन्य।

बुलन्दशहर-उ.प्र.। चैतन्य देवियों की झाँकी में उपस्थित ब्र.कु. नीलम, ब्र.कु. रचना तथा अन्य।

भरतपुर। सेवाकेन्द्र में आने पर मिलान शेथ,अर्थशास्त्री,यू.के., के.डी. स्वामी,उपकुलपति,महाराजा सूरजमल ब्रज विश्व विद्यालय, श्रीमती के.डी. स्वामी तथा उनके पुत्र को प्रदर्शनी समझाते हुए ब्र.कु. प्रवीणा।

डी.एल.एफ.-गुड़गांव। आध्यात्मिक कार्यक्रम में दीप प्रज्वलन करते हुए कमल शर्मा,एम.डी.,सैलवन पॉलिस्टर लि., ब्र.कु. सावित्री, आर.पी. सिंह,फॉर्मर एम्बैसेडर ऑफ कोरिया, ब्र.कु. अनुसुइया, ब्र.कु. शुक्ला, रंजना बहन,प्रिन्सीपल,एच.टी.पब्लिक स्कूल, वेद पाल यादव,ट्रान्सपोर्टर तथा ब्र.कु. रमेश।